International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 25-09-2020; Accepted: 10-10-2020; Published: 29-10-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 10-15

देवघर नगर की जनसंख्या वृद्वि एवं विकास

मुकेश कुमार
Guest Faculty, S.G.G.S. College, Patna Saheb, Patliputra University, Patna, Bihar, India

सारांश
इस शोध–पत्र द्वारा भारत के झारखण्ड राज्य में स्थित देवघर नगर (बैद्यनाथ धाम) की जनसंख्या वृद्धि एवं नगर विकास को प्रस्तुत किया गया है। देवघर के जिला बनने एवं झारखण्ड राज्य के बनने के बाद से इस नगर में आमूल परिवर्तन दृष्टिगाोचर होता है। देवघर नगर बैद्यनाथ शिव मन्दिर के लिये प्रसिद्ध है। द्वादश ज्योर्तिलिंग में से एक ज्योर्तिलिंग के साथ–साथ 51 शक्तिपीठ में से एक शक्तिपीठ भी है। इस कारण यह नगर भारतवर्ष में एक प्रमुख धार्मिक पर्यटक स्थल है। हिन्दू कैलेण्डर के सावन मास में प्रति वर्ष 30 दिनों का लम्बा चलने वाला प्रसिद्ध श्रावणी मेला लगता है जिसमें देश एवं विदेश के शिव भक्त यहॉ आते हैं। यह नगर बी.देवघर, बैद्यनाथ धाम एवं बाबा धाम के नाम से भी जाना जाता है। सन् 1901 ई. से 2011 ई. तक इस नगर के जनसंख्या में लगातार वृद्धि हुई परन्तु प्रतिशत वृद्धि में एक समानता नहीं रही। 1983 ई. में अलग जिला बनने से देवघर नगर के जनसंख्या में काफी तीव्र वृद्धि हुई। 15 नवम्बर 2000 में झारखण्ड राज्य बनने के बाद झारखण्ड सरकार द्वारा इस नगर के विकाश पर जोर दिया गया, इसकारण इस नगर का महत्व और भी ज्यादा बढ गया और 2001 से 2011 के दशक में जनसंख्या वृद्धि दोगुणा से भी ज्यादा हुई, पुराने बसाव क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व बढने के साथ नये बसाव क्षेत्र बसे साथ ही विकाश कार्य में तेजी आई। 1901 ई. से 2011 ई. तक घनी आबादी वाला क्षेत्र बैद्यनाथ शिव मन्दिर (बाबा मन्दिर) के आस–पास का क्षेत्र बना हुआ है।

मूल शब्दः देवघर, विकास, नगर, जनसंख्या, बैद्यनाथ शिव मन्दिर

प्रस्तावना
नगरीय विकास एक सत्त चलने वाली प्रक्रिया है। किसी भी नगर के विकास में जनसंख्या वृद्धि एक प्रमुख घटक है। जनसंख्या वृद्धि से नगर का फैलाव होत ा है। साथ ही जनसंख्या घनत्व भी बढता है। किसी नगर में होने वाली जनसंख्या वृद्धि के कारण ही नये–नये बसाव क्षेत्र बनते हैं, नयी आवश्यकता उत्पन्न होती है। नयी बसाव क्षेत्र में सड़क निर्माण , विद्युत एवं जलापूर्ति की व्यवस्था, गंदे जल का निकासी आदि व्यवस्था की जाती है। इसप्रकार नगर का विकास कार्य होता है। भारत में जनसंख्या के आधार पर ही नगर की श्रेणी तय होती है। जिस नगर की आबादी 1,00,000 से ज्यादा है वे प्रथम श्रेणी के नगर के श्रेणी में आते हैं। देवघर नगर (बैद्यनाथ धाम) के आबादी भी 2011 के जनगणना के अनुसार 2,03,123 है अर्थात् यह नगर प्रथम श्रेणी के नगर के अन्तर्गत आते हैं, जो झारखण्ड राज्य का पॉचवा बड़ा नगर है। जमशेदपुर, धनबाद, रॉची, बोकारो के बाद इस नगर में लोग निवास कर रहे हैं। इस नगर के लिये देवघर, बैद्यनाथ धाम एवं बी.देवघर नाम का प्रयोग किया जाता है। आम बोलचाल में बाबा धाम कहा जाता है।

देवघर नगर $24^0 29^1 23$ उतरी अक्षांश एवं $86^0 41^1 56$ पूर्वी देशान्तर पर अवस्थित है। इसकी मानक समुद्र तल से ऊॅचाई 247 मीटर अर्थात् 833 फीट है। यह नगर राजमहल की पहाड़ी जो कि छोटानागपुर पठार का हिस्सा है, में अवस्थित है। देवघर, झारखण्ड राज्य के उत्तरी भाग में स्थित है एवं इस नगर की उत्तरी सीमा बिहार राज्य से लगती है। नगर के चारों तरफ कई छोटी–छोटी पहाड़ियॉ है। देवघर नगर के उत्तरी भाग में पूर्व से पश्चिम रेल लाईन गुजरती है एवं उत्तर में देवघर का नया रेलवे स्टेशन देवघर जं. स्थित है। नगर के उत्तर–पश्चिम भाग में छोटी पहाड़ी नन्दन पहाड. है। पूर्व में लगभग 20 मील दूर त्रिकूट पहाड. है। नगर के दक्षिण–पूर्व, दक्षिण पश्चिम एवं दक्षिण में भी कम उचाई की पहाड. है। नगर के निकट ही यमुनाजोर एवं ध्रुआ नाला है। इस नगर में गर्मी में अधिकतम तापमान 42^0 तक चला जाता है ठंढ के मौसम में न्यूनत्म तापमान 5^0 तक हो जाता है। वर्षा 110 से 130 से.मी. तक होती है। नगर के अधिकांशतः हिस्से में लाल कंकड़िली मिट्टी है, कही–कही काली मिट्टी भी पाई जाती है।

उदेश्य – प्रस्तुत शोध–पत्र के द्वारा देवघर नगर के जनसंख्या वृद्धि एवं नगर विकास को प्रकाश में लाना। देवघर के जिला बनने एवं झारखण्ड राज्य बनने के बाद नगर में क्या परिवर्तन आया इस पर प्रकाश डालना।

अध्ययन की विधियॉ – प्रस्तुत शोध हेतु प्राथमिक के साथ–साथ अधिकांशतः द्वितीयक ऑकड़ों का उपयोग किया गया है। देवघर नगर का क्षेत्र भ्रमण एवं सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। देवघर नगर निगम से अद्यतन ऑकड़े एवं देवघर नगर का स्केच चित्र लिये गये हैं।

अध्ययन क्षेत्र– प्रस्तुत शोध–पत्र का अध्ययन क्षेत्र देवघर नगर (बैद्यनाथ धाम) है। यह नगर वर्तमान समय में भारत के झारखण्ड राज्य का एक प्रमुख नगर है, जो देवघर जिला का मुख्यालय है।

JHARKHAND
LOCATION MAP
N
AFGHANISTAN
PAKISTAN
CHINA
(TIBET)
New Delhi
NEPAL
BHUTAN
BANGLADESH
JHARKHAND
Ranchi
MYANMAR
BAY
OF
BENGAL
ARABIAN
SEA
LEGEND
International Boundary
State Boundary
Country Capital
State Capital
Map not to Scale
Copyright © 2017 www.mapsofindia.com
SRI
LANKA
INDIAN OCEAN

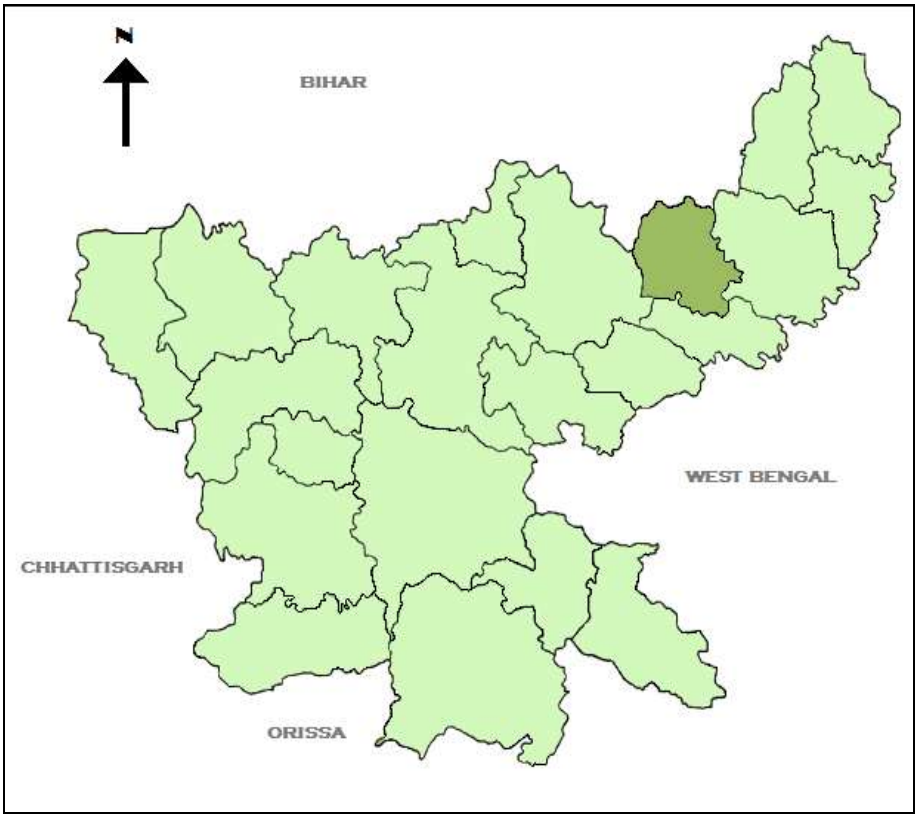
N
BIHAR
WEST BENGAL
CHHATTISGARH
ORISSA

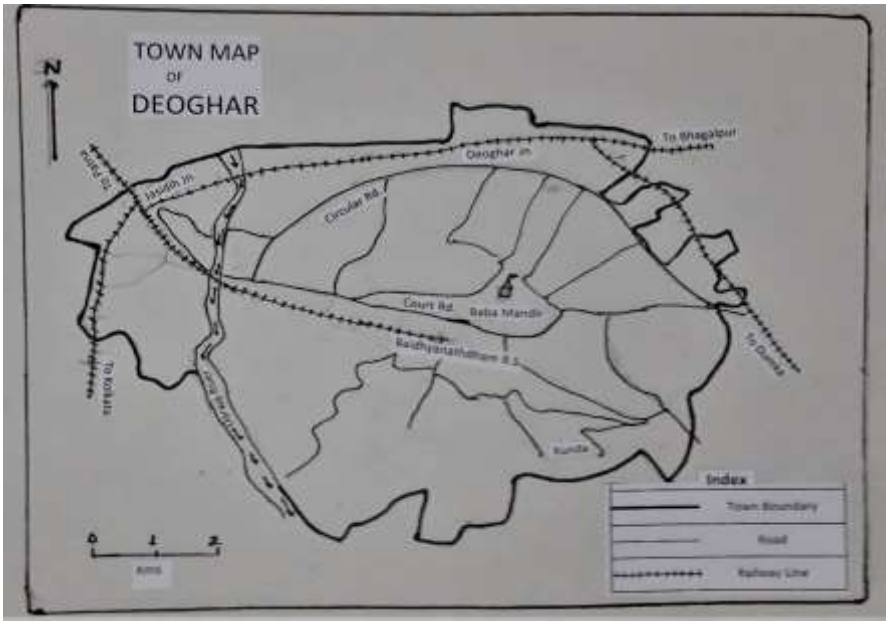

विश्लेषण

देवघर दो शब्दों से मिलकर बना है– देव+घर अर्थात् देवताओं का घर। देवघर (बैद्यनाथ धाम) नगर एक प्राचीन नगर है। भारत के प्रमुख तीर्थ स्थलों में एक महत्त्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। बारह ज्योतिर्लिंग में से एक ज्योतिर्लिंग होने के कारण शिव भक्तों का विशेष लगाव है। पुराणों के अनुसार लंका का राजा रावण, जो कि एक परम शिव भक्त था, उसने कैलाश से शिव आराधना कर मनोकामना लिंग लेकर लंका को चला। रास्ते में उसे लघुशंका करने हेतु शिवलिंग एक ब्राह्मण को देकर लघुशंका करने चला गया । ब्राह्मण रूप में श्री विष्णु भगवान थे, वे कुछ समय बाद शिवलिंग को जमीन पर रख दिये। रावण सात दिनों तक लघुशंका त्यागता रहा और सात दिनों के बाद जब आया तो पाया कि मनोकामना शिवलिंग जमीन पर रखी थी। शर्त के अनुसार एक बार जमीन पर रखे जाने के बाद यह शिवलिंग वहीं स्थापित हो जायेगा और रावण द्वारा ले जाये जा रहे मनोकामना शिवलिंग बैद्यनाथ धाम में स्थापित हो गया, जो देवघर एवं बाबा धाम के नाम से जाना जाता है। देवघर एक शक्तिपीठ भी है। पुराणों के अनुसार जब राजा दक्ष यज्ञ कर रखे थे तो उस सभा में सभी देवी–देवताओं को बुलाया था परन्तु अपने जमाता श्री शिव को नहीं बुलाया। यज्ञ में राजा दक्ष की पुत्री एवं भगवान शिव की पत्नी सती पहुची और शिव के अपमान से आहत होकर यज्ञ कुण्ड में कूद गई जिससे उनका शरीर प्राणहीन हो गया। भगवान शिव क्रोध में आकर सती के शरीर को कंधा पर लेकर प्रलयंकारी नृत्य ताण्डव करने लगे। भगवान विष्णु संसार को प्रलय से बचाने हेतु सती के शरीर को अपने सुदर्शन चक्र से काटने लगे और जहॉ–जहॉ सती के अंग गिरे वहॉ–वहॉ शक्तिपीठ बन बया। देवघर में भी सती का हृदय गिरा और यह एक शक्तिपीठ भी है। यहॉ सती का अन्तिम संस्कार भी किया गया था जिसकारण इसे चिता भूमि भी कहा जाता है। हिन्दू कैलेण्डर के सावन माह अर्थात् जुलाई–अगस्त में देवघर में प्रसिद्ध श्रावणी मेला लगता है। यह मेला लगभग एक माह तक चलता है एवं प्रतिदिन औसतन दो लाख लोग आते है। शिव भक्त बिहार राज्य के सुलतानगंज से गंगा जल लेकर पैदल देवघर बैधनाथ मन्दिर आते हैं, गंगाजल लेकर चलने वाले शिव भक्तों को कांवडि.या कहा जाता है। सुलतानगंज से देवघर की दूरी लगभग 105 किलोमीटर की है।

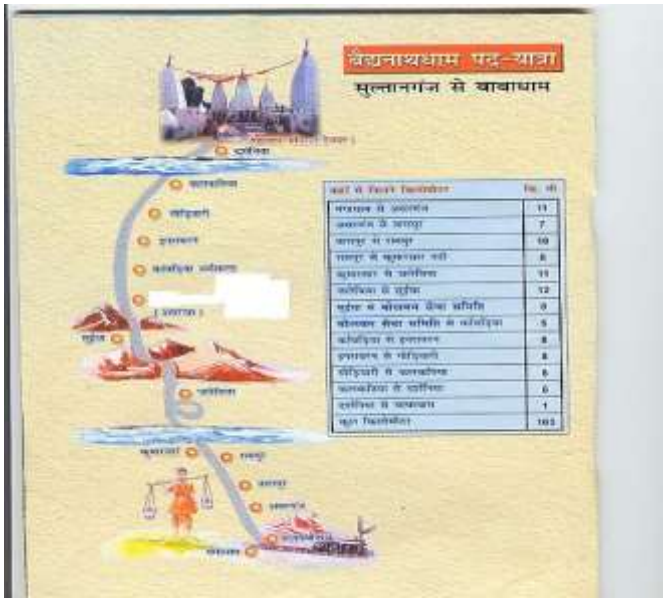

देवघर नगर, देवघर जिला का मुख्यालय है। दिनांक–09 अगस्त 1983 को गजट नोटिफिकेशन सं.–179 दिनांक–01–08–1983 द्वारा सन्थाल परगना जिला से अलग कर देवघर जिला बनाया गया। अंग्रेजों द्वारा 1765 ई. में सन्थाल परगना, भागलपुर, मुंगेर एवं हजारीबाग को सम्मलित रूप से जंगलेटरी दिवानी कहा जाता था। पुराणों में देवघर का वर्णन है। चीनी यात्री ह्वेगसंग अपने यात्रा वर्णन में राजमहल पहाडी का वर्णन किया है। 1201 ई. में मलिक इख्तियारउद्दीन वीन वख्तियार खिल्जी बंगाल एवं असम को जीतने के दौरान लक्ष्मण सेन को हारा कर अपनी राजधानी देवघर को बनाया था जिसे देवगढ कहा जाता था। 12 जुलाई 1576 ई. को राजमहल युद्ध के बाद 1592 ई. में अकबर ने राजमहल को बंगाल की राजधानी बनायी थी। अंग्रेजों के शासनकाल में पहाड़िया जनजाति द्वारा विरोध किया जाता रहा है। सन् 1856 ई. में बरहट के निकट स्थित भगनाडिही गॉव के चार भाई सिधू, कान्हू, चान्द और भैरव ने अंग्रेजों के विरूद्ध सन्थाल विद्रोह का नेतृत्व किया। कान्हू अंग्रेजों के गोली का शिकार हुआ और सिधू गिरफ्तार किया गया एवं बरहट में उसे फांसी लगा दी गयी थी। आन्दोलन के परिणामस्वरूप 1855 ई. में भागलपुर एवं वीरभूम जिला से कुछ क्षेत्र निकालकर एक नया जिला सन्थाल परगना बनाया गया। सन् 1857 ई. का प्रथम स्वतंत्रता आदोलन में देवघर के निकट स्थित रोहणी में विद्रोह हुआ जो बॉसी तक फैल गया। 1930 के विदेशी कपड़ा का बॉयकाट एवं 1942 ई. के भारत छोड़ो आन्दोलन में देवघर में भी काफी प्रभाव दिखा था। आजादी के बाद यह नगर बिहार राज्य का हिस्सा रहा। 15 नबम्बर 2000 ई. को बिहार के 18 जिलों को अलग कर झारखण्ड राज्य बना और देवघर झारखण्ड राज्य का हिस्सा हो गया।

झारखण्ड राज्य बनने के पूर्व झारखण्ड क्षेत्र की आबादी लगातार बढ रही थी। देवघर जिला क्षेत्र एवं देवघर नगर की जनसंख्या में भी वृद्धि हो रही थी इसे निम्न तालिका से देखा जा सकता है।

तालिका 1: दशकीय जनसंख्या वृद्धि

जनगणना वर्ष	झारखण्ड राज्य	प्रतिशत वृद्धि	देवघर जिला	प्रतिशत वृद्धि	देवघर नगर	प्रतिशत वृद्धि
1901	60,68,233		3,28,582		8,838	
1911	67,47,122	11.90	3,41,867	04.04	11,394	28.90
1921	67,67,770	00.31	3,26,618	–04.46	12,355	08.43
1931	79,08,737	16.86	3,73,326	14.30	14,217	15.10
1941	88,68,069	12.13	4,06,874	08.99	19,792	39.20
1951	96,97,254	09.35	4,22,824	03.92	25,510	28.90
1961	1,16,06,489	19.69	4,82,704	14.16	30,813	20.80
1971	1,42,27,133	22.58	5,84,632	21.12	40,356	31.00
1981	1,76,12,069	23.79	7,08,828	21.24	52,904	31.30
1991	2,18,43,911	24.03	9,33,113	31.64	76,380	44.40
2001	2,69,45,829	23.36	11,65,390	24.89	98,388	28.80
2011	3,29,88,134	22.42	14,92,073	28.03	2,03,123	106.40

स्त्रोत– स्वगणन, जनगणना रिपोर्ट आधारित

तलिका–1 से स्पष्ट है कि 1901 ई. से 2011 तक के सभी दशकों में झारखण्ड राज्य, एवं देवघर नगर में जनसंख्या बढ़ी है। 1921 ई में झारखण्ड एवं देवघर नगर में जनसंख्या बढ़ी परन्तु देवघर जिला में जनसंख्या में कमी आई। भारत वर्ष के जनसंख्या में भी 1921 ई. के जनगणना में आबादी में कमी आई थी। 1901 ई. से आजतक देवघर नगर की जनसंख्या में उत्तरोतर वृद्धि हो रही है। प्रतिशत वृद्धि के दृष्टि से नगर की आबादी वृद्धि में उतार–चढाव हो रहा है। देवघर नगर की आबादी 1901 ई. मात्र 8,838 थी और नगर पंचम श्रेणी का नगर था। 1911 ई. में यह नगर चतुर्थ श्रेणी का नगर हो गया। आबादी बढ़कर 1951 ई. में 25,510 हुई और नगर तृतीय श्रेणी का नगर हो गया। देवघर के जिला बनने के पूर्व के जनगणना वर्ष 1981 ई. में इस नगर की आबादी बढ़कर 52,904 हुई और नगर द्वितीय श्रेणी का नगर हो गया। जनगणना वर्ष 2001ई. में इस नगर की आबादी 98,388 तथा झारखण्ड राज्य बनने के बाद 2011 ई. के जनगणना में देवघर नगर की आबादी बढ़कर 2,03,123 हो गई है और नगर प्रथम श्रेणी का नगर हो गया। इसे निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है।

तालिका 2

वर्ष	जनसंख्या	जनसंख्या वृद्धि	प्रतिशत वृद्धि
1901	8,838	–	
1901–1951	25,510	16,672	188.63
1951–1981	52,904	27,394	107.38
1981–2001	98,388	45,484	85.97
2001–2011	2,03,123	1,04,735	106.40

देवघर नगर की जनसंख्या वृद्धि

स्त्रोत– स्वगणन जनगणना रिपोर्ट पर आधारित

तलिका से स्पष्ट है कि 1901 ई. में देवघर की आबादी काफी कम थी। 1901 ई. से 1951 ई. के बीच इन 50 वर्षों में देवघर नगर की आबादी में लगभग तीन गुणा वृद्धि हुई। प्रतिशत वृद्धि की दृष्टि से 1901 ई. से 1951 ई. के बीच 188.63 प्रतिशत रही जबकि आबादी में मात्र 16,672 संख्या ही बढ़ा। 1951 ई. से देवघर जिला बनने के पूर्व के जनगणना वर्ष 1981 ई. में आबादी में दुगुणा से ज्यादा बढ़ी, जो 107.38 प्रतिशत की वृद्धि है लेकिन इन तीस वर्षो में आबादी में 27,394 संख्या की वृद्धि हुई। सन् 1981 ई. से 2001 ई. के बीच आबादी में 98,388 संख्या में वृद्धि हुई। झारखण्ड राज्य बनने के बाद के जनगणना वर्ष 2001 ई. से

2011 ई के बीच में आबादी दोगुणा से ज्यादा बढ़ी, इस दशक में एक लाख चार हजार सात सौ पैतीस आबादी बढ़ी है। इसे निम्न चित्र से देखा जा सकता है–

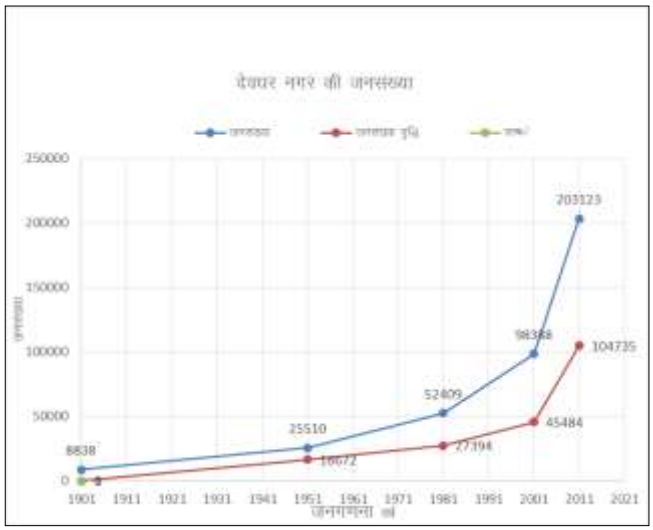

देवघर नगर की आबादी में लगातार वृद्धि हो रही है। देवघर के जिला बनने के पूर्व यहॉ बड़ी–बड़ी कोठियॉ थी, कोठियॉ के मालिक स्वास्थ्य लाभ के लिये वर्ष के एक से तीन माह के लिये देवघर आकर रहते थे। नगर की आबादी बैद्यनाथ शिव मन्दिर के आस–पास घनी बसी थी। मुख्य व्यवसायिक कार्य भी मन्दिर के आस–पास ही हो रहे थे। नगर के विभिन्न हिस्सों में कुछ दूरी पर कुछ लोगों का निवास था और कुछ दूर जन शून्य क्षेत्र था। देवघर नगर का ज्यादातर सरकारी कार्यालय कचहरी के आस–पास था जिसकारण यहॉ कई दुकाने चल रही थी जो आज भी चल रही हैं। सत्संग नगर जो कचहरी से कुछ ही दूरी पर स्थित है, यहॉ एक धर्म गुरू रहते थे, उनके शिष्यों के लगातार आते रहने से इस क्षेत्र का विकाश हो रहा था जो वर्त्तमान समय में दृष्टिगोचर होता है। बैद्यनाथ मन्दिर से लगभग 6 किलोमीटर दूर जसीडीह रेलवे स्टेशन है, जो हावड़ा–दिल्ली मुख्य रेल मार्ग पर स्थित है। जसीडीह से देवघर एक लिंक रेल लाईन है। जसीडीह मुख्य रेलवे स्टेशन होने के कारण जसीडीह रेलवे स्टेशन के आस–पास के क्षेत्र एवं देवघर में स्थित रेलवे लिंक स्टेशन बैद्यनाथधाम के क्षेत्र में कुछ घनी आबादी एवं कुछ व्यवसायिक कार्य हो रहे थे जो वर्त्तमान काल में भी चल रहा है।

1991 ई. के जनगणना में जनसंख्या वृद्धि 44.4 प्रतिशत हो गई इसका मुख्य कारण इस काल में देवघर का अलग जिला बनना है और जिसकारण देवघर नगर के आस–पास से लोग पलायन कर यहॉ आये। जिला बनने से जिला स्तरीय कार्यालय खुले, जिससे कार्यालय के आस–पास उससे से जुड़ी कई प्रतिष्ठान खुल गये। देवघर जिला के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र के जनता का जिला स्तरीय कार्य हेतु देवघर आने की आवश्यकता होने लगी। बड़ी–बड़ी भूखण्ड का आकार छोटा होने लगा। आबादी से लगा परती क्षेत्र एवं बगीचा कॉलनी का रूप लेने लगा। हनुमान टिकरी, करनीबाग, बम्पास टाऊन, बिलियम्स टाऊन, बैजनाथपुर, पोखना टीला, बरमशिया, झौसागड़ी इत्यादि मुहल्लों की आबादी घनी हुई एवं इन मुहल्लों से सटे खाली पड़े भूभाग पर कॉलनियॉ बन गई। 2001 ई. में जनसंख्या बढी परन्तु पिछले दशक की तुलना से कम रही अर्थात् प्रतिशत वृद्धि दर कम हो गई। इसका मुख्य कारण बिहार विभाजन कर झारखण्ड राज्य का बनना रहा है। इस दौरान लोगों के बीच उपापोह की स्थिति थी जिससे विशेषकर बाहर से आये लोगों का पलायन हुआ।

2011 ई. के जनगणना में जनसंख्या में काफी तीव्र वृद्धि हुई इसका मुख्य कारण बिहार विभाजन से नये राज्य झारखण्ड का बनना है एवं झारखण्ड राज्य के एक प्रमुख नगर के रूप में देवघर नगर का स्थापित होना रहा है। झारखण्ड सरकार ने देवघर को राज्य की सांस्कृतिक राजधानी बनाने की घोषणा की एवं देवघर के विकाश पर विशेष ध्यान दिया। फलतः देवघर के आस–पास के क्षेत्रों एवं बिहार राज्य के विभिन्न क्षेत्र से लोग पलायन कर देवघर में बसने लगे। इन कारण से देवघर की आबादी पिछले दशक की तुलना में दोगुना से भी ज्यादा हो गई।

देवघर नगर का मानचित्र (वार्डानुसार)

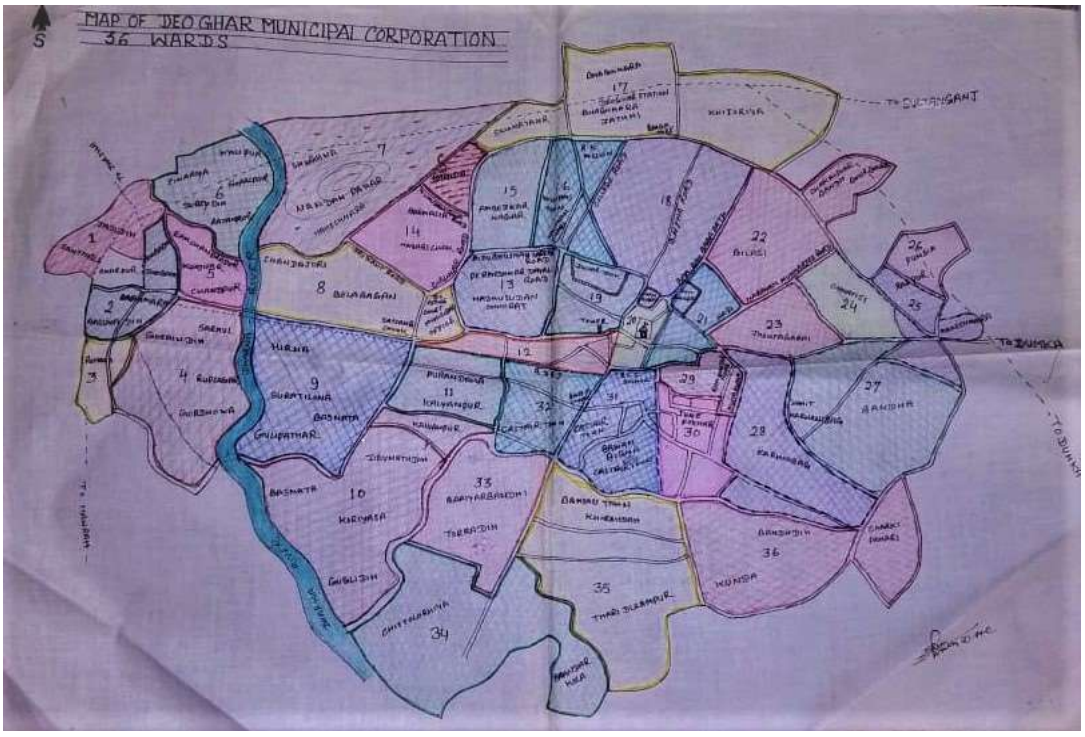

स्त्रोत– देवघर नगर निगम

देवघर नगर में सन् 2010 तक देवघर नगर पालिका थी जिसमें कुल 17 वार्ड थे। सन् 2010 ई. में नगर पालिका के स्थान पर देवघर नगर निगम बनाया गया जिसमें कुल 35 वार्ड हो गये। सन् 2015 ई. को एक नया वार्ड जोड़ा गया और देवघर नगर निगम में कुल 36 वार्ड हो गये। देवघर नगर निगम 119.60 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला है । इस नगर की जनसंख्या का जमावड.ा नगर के पूर्व मध्य में स्थित बैद्यनाथ मन्दिर के आस–पास में है। बाबा मन्दिर वार्ड सं. 20 एवं 21 के मध्य स्थित है। बाबा मन्दिर का पूर्व दरवाजा वार्ड सं.–21 में है वही पश्चिम दरवाजा वार्ड सं.– 20 में है। मन्दिर का उत्तरी दरवाजा, जिसे सिंह द्वार कहते हैं यह भाग वार्ड सं.– 20 एवं वार्ड सं.–21 का सीमान्त क्षेत्र है। वार्ड सं.– 11, 12, 13, 15, 16, 19, 20, 21, 23, 29, 30, 31 और 32 जो कि बैद्यनाथ मन्दिर के 3 किलोमीटर के अन्दर स्थित है, इन वार्डो में व्यवसायिक कार्य भी होते हैं और जनसंख्या घनत्व ज्यादा है। वार्ड सं.– 19, 20 और 21 क्षेत्रफल की दृष्टि से छोटा है पर घना बसा है, इन्ही तीन वार्डो में ज्यादा दुकान, होटल एवं अन्य व्यवसायिक प्रतिष्ठान हैं। वार्ड सं.– 17 में देवघर जं. रेलवे स्टेशन है, यहॉ से दुमका एवं भागलपुर के लिये ट्रेन जाती है। वार्ड सं.–1 में जसीडीह जं. है। वार्ड सं.– 1 से आठ तक जसीडीह क्षेत्र में स्थित है। वार्ड सं.– 9, 10, 33, 35 और 36 में जनसंख्या घनत्व काफी कम है। वार्ड सं.– 21 में 29837 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर की दर से निवास कर रहे हैं जो कि देवघर के सभी वार्डो में से सबसे ज्यादा है। वही वार्ड सं.– 2 में 1376 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर की दर से निवास कर रहे हैं, जो देवघर के सभी वार्डो में सबसे कम है।

देवघर के जिला बनने के बाद इस नगर में जिला स्तरीय कार्यालय, अधिकारियों के निवास स्थल के साथ–साथ सड़क जैसी बुनियादी क्षेत्र में तेजी आई। परन्तु इस नगर का मुख्य विकाश झारखण्ड राज्य के बनने के बाद से हुआ है। राज्य सरकार ने इस धार्मिक पर्यटक नगर को राज्य की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में विकशित करने कार्य कर रही है। देवघर के नन्दन पहाड़ के एक हिस्से में चिल्ड्रेन पार्क बनाया गया। 2007 ई. में बी.आई.टी मेशरा का शाखा खोला गया है, यह देवघर जसीडीह के बीच डाबर ग्रामोद्योग के पास स्थित है। नन्दन पहाड़ के शिल्प ग्राम में 3डी थियेटर बनाया गया है। जलसार, जो कि तलाबों का समूह है, इसी क्षेत्र में चिल्ड्रेन पार्क बनाया गया। जलसार रोड के सटे बहने वाली नाले को पाटकर चौड़ा सड़क बनाया गया है। बैद्यनाथ मन्दिर के निकट मानसरोवर झील को पाटकर वहॉ काबड़ियॉ के लिये बहुमंजिला भवन बनाया गया है। पहले देवघर नगर से 6 किलोमीटर दूर जसीडीह में रेल स्टेशन था जहॉ हावड़ा–दिल्ली मार्ग के सभी टेन रूकती है । जसीडीह से देवघर ब्रांच लाईन थी जो देवघर तक ही सीमित थी। 12 जुलाई 2011 ई से एक नयी रेल लाईन पर ट्रेन चल रही हैं। यह लाईन जसीडीह से देवघर होते हुए दुमका एवं दुमका से रामपुर हाट तक जाती है। देवघर से एक रेल लाईन बांका होते हुए भागलपुर तक जाती है, इस लाईन पर भी रेल चल रही है। दो नयी रेल लाईन पर कार्य चल रहा है। एक लाईन देवघर से पीरपैती होते भागलपुर तथा दूसरी रेल लाईन देवघर से सुल्तानगंज को जायेगी। स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना 2003 के तहत मार्च 2006 में देवघर में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की स्थापना की घोषणा हुई, मई 2018 में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा इसकी नीव रखी गई और सितम्बर 2019 से यहॉ मरीजों को देखा जाना शुरू हो गया है। देवघर को हवाई पट्टी से जोड़ने के लिये 2013 में झारखण्ड सरकार ने विमानपतन प्राधिकरण के साथ एक समझौता ज्ञापन किया था, 25 मई 2018 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा देवघर में अटल बिहारी बाजपेयी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा की नीव रखी गई थी। 654 एकड़ में बना हवाई हड्डा बन कर तैयार है। नवम्बर 2020 से नियमित उड़ान सेवा प्ररम्भ होने की सम्भावना है। हवाई अड्डा बनने से कई परिवार विस्थापित हुये इन परिवारों को नैयाडिह में टाऊनशिप कॉलोनी विकाश कर सरकार द्वारा दिया गया है। देवघर के कुमैठा में झारखण्ड राज्य का पहला स्पोर्टस कम्पलेक्स बनाया गया है जो जसीडीह के निकट है। देवघर नगर निगम का नया भवन 2017 में बस डिपो के 2 एकड़ भूमि पर बनना प्रारम्भ किया गया है, वर्त्तमान समय में भवन बिल्डअप एरिया 85000 वर्ग फीट में बन कर तैयार है, कोरोना बीमारी के कारण इसका उदघाटन नहीं हो पाया है। देवघर में संस्कृत विश्वविद्यालय खोलने की भी योजना है। शिवगंगा के जल को हमेशा स्वच्छ रखा जाय, इस योजना पर भी कार्य हो रहा है। नगर के कूड़ा–कचरा डम्पिंग कर खाद एवं बिजली उत्पादन की योजना है। नगर को स्वच्छ सुन्दर एवं सुरक्षित बनाने पर कार्य हो रहा है।

निष्कर्ष– देवघर नगर का विकास बैद्यनाथ मन्दिर से प्रारम्भ होकर चारों ओर फैल गया। झारखण्ड राज्य बनने के बाद देवघर नगर की जनसंख्या में काफी तीव्र वृद्धि हुई। झारखण्ड राज्य सरकार द्वारा इसके विकाश के साथ–साथ सौन्दरीकरण एवं यातायात के साधनों के विकाश पर विशेष जोर दिया गया है। हवाई मार्ग से जुटने के कारण देश के किसी भी क्षेत्र से यहॉ पहुॅचना आसान हो जायेगा। भविष्य में इस नगर की जनसंख्या घनत्व और बढेगी साथ ही साथ नगर का फैलाव नये–नये क्षेत्रों में होगा। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान जो कि देवीपुर प्रखण्ड में है उस क्षेत्र का विकाश होगा और देवघर के मुख्य नगर क्षेत्र का हिस्सा हो जायेगा। जसीडीह के निकट कुमैठा में स्पोर्टस कम्पलेक्स बनने से इस क्षेत्र में भी विकाश होगा। हवाई अड्डा जो कि देवघर नगर के दक्षिणी हिस्से में हैं, उस क्षेत्र के विकाश में तेजी आयेगी और भविष्य में नगर के दक्षिणी सीमा से सट्टे नये क्षेत्र नगर के हिस्सा होगे और देवघर नगर भारत के विकसीत नगर की श्रेणी में स्थान बनायेगा।

संदर्भ सूची

1. सेन्सस ऑफ इण्डिया 2011, झारखण्ड, डिस्ट्रीक सेन्सस हैण्डबुक, देवघर, सिरिज–21, पार्ट– ग्प ए एवं पार्ट– ग्प बी.
2. झारखण्ड का भूगोल– आर. के. तिवारी, राजेश प्रकाशन, नई दिल्ली
3. झारखण्ड–लैण्ड एण्ड पीपुल– वी.एन.पी.सिन्हा एण्ड एल.के. पी. सिंह, राजेश प्रकाशन, नई दिल्ली
4. झारखण्ड सम्पूर्ण अध्यन– पी. के. सिंह, उपकार प्रकाशन, आगरा
5. सेकरेड कम्पलेक्स ऑफ देवघर एण्ड राजगीर –सचिन्द्र नारायण
6. संदर्भित वर्ष का जनगणना रिपोर्ट
7. द्वादश ज्योतिर्लिंग –गीता प्रेस
8. शक्तिपीठ–दर्शन –गीता प्रेस
9. वेद और पुराणों में वर्णित महाशक्तियॉ और उनके 51 शक्तिपीठ –गोपालजी गुप्त, पुस्तक महल